Gyanvividha, Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-35-40

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.- 35-40
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. विजय कुमार धत्तरवाल
सह - आचार्य, हिन्दी विभाग,
श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाल विश्वविद्यालय, चुड़ैला, झुंझुंनूं (राजस्थान).

Corresponding Author :

डॉ. विजय कुमार धत्तरवाल
सह - आचार्य, हिन्दी विभाग,
श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाल विश्वविद्यालय, चुड़ैला, झुंझुंनूं (राजस्थान).

विश्वम्भरनाथ उपाध्याय के उपन्यासों में तिलिस्मी तत्व

1. भूमिका- शोध एवं समीक्षा की दृष्टि से हिंदी का तिलिस्मी साहित्य अभी तक उपेक्षित रहा है। कथा समीक्षकों की दृष्टि, कथा साहित्य के मनोरंजन पक्ष की अपेक्षा, भाव एवं विचार पक्ष पर अधिक रहने से इस पक्ष की उपेक्षा हुई है।

सामान्य पाठक वर्ग में तिलिस्मी साहित्य की ख्याति एवं रुचि दिन प्रतिदिन बढती ही गई। हिंदी कथा साहित्य में देवकीनंदन खत्री और गोपाल राम गहमरी ही ऐसे कथाकार थे जिन्होंने हमारे विशाल उपन्यास प्रासाद में नींव के पत्थर का काम किया है। आज भी हिंदी कथा साहित्य में तिलिस्मी तत्वों से युक्त उपन्यासों ने कथा तत्व का संरक्षण कर ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवेशों में अनुभूत जीवन का वास्तविक उद्घाटन और सामान्य से सामान्य पाठक की कौतूहल वृत्ति को तोष प्रदान करने का अपूर्व काम किया है।

शिल्प और कथ्य की दृष्टि से अंग्रेजी में जासूसी उपन्यासों की एक अभिनव परंपरा उपलब्ध होती है। जासूसी उपन्यासों के अलावा अंग्रेजी में रहस्यमूलक, भयमूलक, रोमांचकारी एवं अद्भुत कथाएं भी मिलती हैं किंतु तिलिस्मी उपन्यासों का प्राय अभाव ही दृष्टिगत होता है। हिंदी में तिलिस्मी उपन्यासों की एक निश्चित धारा जासूसी उपन्यासों के साथ-साथ चली, फली-फूली और द्वितीय विश्व युद्ध की कराल लपटों में विलुप्त हो गयी। प्रस्तुत अध्याय इस लुप्त हुई धारा को संप्रति युग में प्रवाहित करने का प्रयास है।

प्रस्तुत साहित्य के सही-सही मूल्यांकन में अवरोधस्वरुप ऐसी कुछ मान्यताएं-विश्वास हैं जो दृढिभूत हो चुके हैं। आलोचकों की दृष्टि से इसे मात्र सस्ता साहित्य माना गया है और पाठकों की दृष्टि में मात्र मनोरंजन का आधार। तिलिस्मी कथा साहित्य के क्रमिक विकास के अध्ययन में सबसे बडी अडचन समूचे प्रकाशित साहित्य की प्राप्ति में है

हिंदी आलोचना साहित्य में इस ओर छुटपुट प्रयास अवश्य हुए-देवकीनंदन खत्री, गोपाल राम गहमरी और किशोरीलाल गोस्वामी प्रभृति रचनाकारों की लेखनी पर थोड़ा-बहुत लिखकर हिंदी के सुधी-समीक्षकों ने कथा साहित्य की ऐतिहासिकता के संदर्भ में चंचुपात जरुर किया, किंतु तिलिस्मी कथा साहित्य के स्वतंत्र अध्ययन की ओर उनकी उपेक्षित मनोवृत्ति ही दृष्टिगत होती है। एतदर्थ प्रस्तुत शोध पत्र में पहली बार हिंदी कथा साहित्य में तिलिस्मी परंपरा के संदर्भ को दृष्टिगत रखते हुए अनुसंधेय उपन्यास साहित्य में तिलिस्मी तत्वों की खोज का प्रयास किया गया है।

2. तिलिस्म से अभिप्राय- 'उपन्यास' शब्द का नवीन (अंग्रेजी-नॅवल) अर्थ में प्रयोग बंगला और हिंदी में एक ही परिस्थिति में हुआ। बंगला में यह पहले है और हिंदी में कुछ पीछे, और कदाचित् हिंदी में इसका आगमन बंगला के स्नेह से ही हुआ था, इसलिए इस दिशा में हिंदी बंगला की ऋणी है"[1]

इसी भांति तिलिस्मी कहानियां फारसी से उर्दू में और उर्दू से हिंदी उपन्यास साहित्य में आयी है। प्राचीन कथा आख्यानों का भी तिलिस्मी रचनाओं में योगदान रहा है। 'कथा और आख्यायिका में कवि कल्पना के बल पर अपनी वास्तविक दुनिया से भिन्न एकदम नई दुनिया बना सकता है"[2]

हिंदी उपन्यास में 'तिलिस्म'और 'तिलिस्मी' शब्दौं का सबसे पहले प्रयोग देवकीनंदन खत्री द्वारा ही मिलता है। तिलिस्मी साहित्य अरब की देन है, यद्यपि इस प्रकार की पूर्व परंपरा हमें भारतीय साहित्य में भी इतस्तत: उपलब्ध होती है। 'तिलिस्म' मूलत: अरबी भाषा का शब्द है जिसकी उत्पति शब्द 'टेलेस्मा' से हुई है। अंग्रेज़ी में इसे ही 'टैलिस्मन' बना दिया गया है जिसका अर्थ होता है- मंत्र-तंत्र, इन्द्रजाल, जादू-टोना, अलौकिक कारनामें आदि। वैदिक भाषा में 'माया' शब्द के भी यही अर्थ मिलते हैं[3]

संभव है यूनानी 'तिलिस्मा' शब्द का 'मां' अंश आगे चलकर 'माया' में परिवर्तित और परिवर्द्धित हो गया हो। रामायण काल और महाभारत काल में माया-विद्या का जो प्रचार मिलता है, उसमें जादू-टोना, जंत्र-मंत्र को विशेष प्रश्रय दिया गया है।[4]

श्री ब्रजरत्नदास ने 'तिलिस्म' शब्द का अर्थ इस प्रकार किया है "ऐसी आश्चर्यजनक कल्पना जो दिखाई न पडे., कोष के रक्षार्थ नियत की गई भयावनी शक्ल या कुछ दवाओं और लग्रों के मेल से कोष पर बांधा हुआ यंत्र आदि। "श्री देवकीनंदन खत्री 'तिलिस्म ' की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि 'तिलिस्म 'वही शख्स तैयार करता है जिसके पास बहुत माल खजाना हो और जिसका कोइ वारिस न हो। तब वह अच्छे-अच्छे ज्योतिषियों-नजूमियों से दरयाफ्त करता है कि उसके या उसके भाइयों के खानदान में भी कभी कोई प्रतापी या लायक पैदा होगा या नहीं। आखिर ज्योतिषी और नजूमी इस बात का पता देते हैं कि इतने दिनों बाद आपके खानदान में एक लडका प्रतापी होगा, बल्कि उसकी जन्मपत्री भी लिखकर तैयार कर देते हैं। उसी के नाम से खजाना और अच्छी-अच्छी कीमती चीजों को रखकर उस पर तिलिस्म बांधते हैं।[5]

तिलिस्मी संरचनाओं में ऐयारों का गठन और कार्य प्रणाली बडी विचित्र होती है और बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है ये ऐयार और ऐयारा नायक राजकुमार के सहायक होते हैं। इस प्रकार 'तिलिस्म'शब्द का विकास जिस 'टैलिस्मन' शब्द से हुआ है, उसका अर्थ है 'चमत्कारपूर्ण कल्पना' और इनकी पृथक पहचान के रुप में लिखा गया है, "जिस उपन्यास में आश्चर्यजनक कारनामों की भरमार होगी, जहां पात्र मौत की घाटी से भी किसी चमत्कार के कारण लौटकर सही-सलामत घर आ जाएगा, विघ्न-बाधाओं के जंगल में घिरे रहने पर कैंची की तरह मार करता हुआ बाल-बाल बच निकलेगा, वह तिलिस्मी उपन्यास कहा जाएगा।[6]

3. हिंदी के प्रमुख तिलिस्मी उपन्यास एवं उपन्यासकार : हिंदी गद्य के क्षेत्र में उपन्यास विधा का अवतरण एक महान घटना थी। इस रुप में हिंदी के श्री निवासदास कृत 'परीक्षा गुरु', श्रद्धाराम फुल्लोरी कृत 'भाग्यवती', इंशाअल्लाह खां

रचित 'रानी केतकी की कहानी', किशोरीलाल लाल गोस्वामी कृत 'कुसुमकुमारी', देवकीनंदन खत्री कृत 'चन्द्रकांता' प्रथम उपन्यासों में गण्य है।

(I) देवकीनंदन खत्री– खत्री का जन्म संवत 1918 वि. में मुजफ्फरपुर में हुआ। ये ही सबसे पहले उपन्यासकार हैं जिन्होंने हिंदी उपन्यास में नई ऐयारी-तिलिस्म प्रधान रोमांस परंपरा का प्रवर्तन और स्थापन किया। इनके द्वारा रचित- 'चन्द्रकांता', चन्द्रकांता संतति', भूतनाथ', नरेंद्र मोहिनी', 'कुसुमकुमारी', 'वीरेंद्र वीर', 'काजल की कोठरी', और 'गुप्त गोदना', आदि है।

(II) किशोरीलाल गोस्वामी– गोस्वामी जी भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग के बीच की कड़ी है। गोस्वामी जी ने लगभग 65 उपन्यास लिखें हैं जो ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, तिलिस्मी, और जासूसी दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इनके द्वारा रचित प्रमुख तिलिस्मी उपन्यास हैं–'लवंगलता', कुसुमकुमारी या मस्तानी', लखनऊ की कब्र' या 'शाही महलसरा', तिलिस्मी शीशमहल' आदि।

(III) निहालचंद वर्मा - वर्मा जी ने जादुई, तिलिस्मी, ऐयारी और जासूसी उपन्यास लिखें हैं। 'मोतीमहल' और 'सोने का महल' इनके तिलिस्मी उपन्यास हैं। 'जादू का महल' भी तिलिस्मी उपन्यास है।

(IV) कैलाशनाथ गुप्त - कैलाशनाथ गुप्त ने जासूसी, तिलिस्मी, जादुई और सामाजिक उपन्यास लिखें हैं। इनकी प्रमुख रचनाएं हैं- 'कटा सिर', राक्षस की बेटी', 'जादुगरनी', 'जादुई मैना', 'जादुई शीशा', 'जादू महल ' आदि।

इनकी प्रमुख तिलिस्मी रचनाएं हैं - 'तिलिस्म की रानी', 'फ़ौलादी पंजा', 'शैतान', 'तिलिस्मी किला', 'तिलिस्मी शेर' आदि।

(V) हरिकृष्ण जौहर - बाबू देवकीनंदन खत्री के तिलिस्मी रास्ते पर चलने वाले वालों में बाबू हरिकृष्ण जौहर का प्रमुख नाम है। इनकी प्रमुख तिलिस्मी रचनाएं हैं- 'कुसुमलता' (चार भाग),

'भयानक रूप', 'मयंक मोहिनी' या 'माया महल'

'कमल कुमारी' व तिलिस्म नीलम, 'जादूगर',

'निराला', 'नकाबपोश' आदि हैं।

(VI) दुर्गाप्रसाद खत्री - ये देवकीनंदन खत्री के पुत्र थे। इन्होंने विरासत में मिले पिता के अधूरे कार्य को संपन्न किया। उन्होंने 'भूतनाथ' उपन्यास के शेष पन्द्रह (15)भाग लिखे और उसे महान तिलिस्मी उपन्यासों की पंक्ति ला बैठाया। इनके द्वारा लिखित अन्य उपन्यासों में- 'रक्त मंडल', 'लाल पंजा', और 'सफेद शैतान' प्रमुख हैं।

वस्तुत: देवकीनंदन खत्री द्वारा प्रवर्तित विशुद्ध तिलिस्मी धारा में क्रमश: अन्य भावों का आरोपण भी होने लगा और तिलिस्माती चेतना काल के प्रभाव में धीरे-धीरे मंद होती गयी। आगे चलकर समकालीन काल के उपन्यास लेखकों ने अपने-अपने उपन्यासों में यत्किंचित तत्वों का प्रयोग किया है।

4. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय के उपन्यासों में तिलिस्मी तत्व-

डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय का जन्म 7 जनवरी 1925 को ग्राम-अधासी, कस्बा-फंफूंद, तहसील-औरेया, जिला-इटावा, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनहोंने डी.लिट. तक की अकादमिक उपाधि प्राप्त की और हिन्दी प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष व कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर भी आसीन रहे। इन्होंने काव्य, आलोचना एवं उपन्यास विधा में अपनी प्रतिभा से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है।

इनके द्वारा रचित कुल 10 (दस) उपन्यास हैं- 'रीछ', 'पक्षधर', 'जाग मछन्दर गोरख आया', 'दूसरा भूतनाथ', 'जोगी मत जा', 'विक्षुब्ध', 'कठपुतली', 'विश्वबाहु परशुराम', 'प्रतिरोध', 'सिद्ध सरहपा' आदि। उपाध्याय जी की उपन्यास सृजना का उद्देश्य मनोविनोद या मनोरंजन नहीं है, जैसा कि तिलिस्मी हिंदी उपन्यास के प्रवर्तक देवकीनंदन खत्री का रहा था। इनके उपन्यासों का उद्देश्य जन साधारण का को नियतिवाद से निकालकर शोषण विहीन समाज की स्थापना

रहा है। लेकिन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आधारित उपन्यासों में तत्कालीन युग वातावरण को अभिव्यक्ति देने वश, उनमें चमत्कार-कल्पना का औत्सुक्य पाया जाता है। ऐतिहासिकता और मिथकीयता के मिले-जुले स्तर के कारण गूढ़ता, रहस्यमयता, योगी सिद्धों के चमत्कार, पाठक का कौतूहल वर्धन करते हुए, उसे चन्द्रकांता की याद दिला देते हैं।

उपाध्याय जी के उपन्यासों में तिलिस्मी परंपरा के कथानक वैशिष्ट्य संबंधी कुछ लक्षण विद्यमान हैं। 'चंद्रकांता 'और 'भूतनाथ 'के आधार पर निर्दिष्ट किये गये लक्षणों को उपाध्याय जी के उपन्यासों में खोजना व्यर्थ है, फिर भी तिलिस्मी उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ तत्व इनके कुछ उपन्यासों में पाये जाते हैं, जिनका विस्तृत वर्णन 'जाग मछन्दर गोरख आया', 'जोगी मत जा', 'विश्वबाहु परशुराम' एवं 'सिद्ध सरहपा' के संदर्भ में आगे प्रस्तुत किया जा रहा है। उपर्युक्त चार उपन्यास ऐतिहासिक-मिथकीय पृष्ठभूमि आधारित है। इसलिए इनमे घटना वैचित्र्य, यौगिक चमत्कारों का प्रदर्शन, असंभव को संभव बनाने और सत्य और न्याय की विजय का प्रमुखता से वर्णन मिलता है।

(I) जाग मछन्दर गोरख आया - इस उपन्यास के दो लोक हैं एक कदली लोक या तंत्र लोक या भोग लोक और दूसरा है-इहलोक या साधना लोक। मत्स्येन्द्रनाथ उपन्यास का मुख्य पात्र है अथवा नायक है। उनका विरोधी पक्ष प्रस्तुत करने के लिए गोरख नाथ का चरित्र-चित्रण किया गया है। एक तरह से यह भोग और योग का संघर्ष चित्रण है और अंत में भोग पर योग की विजय, तिलिस्मी उपन्यासों के उद्देश्य सत्य की विजय को दर्शाता है। इस उपन्यास में भी तिलिस्मी उपन्यासों की तर्ज पर ऐयार जिस प्रकार किसी को औषधि सूंघाकर बेहोश करते हैं, उसी प्रकार नर्मदा की पोटली में बंधे स्वर्ण को डाकू पंचम सिंह एवं अन्य डाकू देख सूंघकर बेहोश हो जाते हैं। उदाहरण द्रष्टव्य है-"क्षणभर में पंचम सिंह की नाक बजने लगी। उसने बडे जोर से अंगड़ाई ली और जहां खडा था, वहीं लम्बलेट हो गया। यही दशा अन्य डाकुओं की हुई। सब एक के बाद एक निद्रा के वशीभूत हो गए। [7]

योगियों की खेचरी, धौति, नेति, त्राटक आदि मुद्राएं साधारण जन को चमत्कृत करती हैं। गुरु गोरख नाथ के अदृश्य होने व उड्डयन योग की कला का उदाहरण दृष्टव्य है-"अकस्मात गुरु गोरख नाथ अग्नि के भभुके से आकाश में उछले और दर्शकों के नेत्रों को विस्मय से फाड़ते हुए, जगमगाकर टूटते तारे की तरह क्षितिज में खो गये। "[8]

योगियों का परकाया प्रवेश, पक्षियों की संकेत भाषा, तंत्र-मंत्र-तंत्र की शक्ति के द्वारा चमत्कारी कार्यों को अंजाम देना, गजनी के मुल्ला और गोरख नाथ के बीच जादुई चमत्कार के किस्से इसे तिलिस्मी तत्वों से युक्त करते हैं। तिलिस्मी उपन्यासों का अनुकरण न होते हुए भी प्रस्तुत उपन्यास में तिलिस्मी तत्वों का प्रयोग बहुतायत से मिलता है।

(II) जोगी मत जा– यह ऐतिहासिक-पौराणिक मिथक आधारित कथावस्तु से संपन्न उपन्यास है। इसमें रहस्य भी है और इतिहास भी। 'जोगी मत जा' उपन्यास की कथा का आधार लोक कथाओं में प्रसिद्ध एवं इतिहास में विक्रमादित्य के अग्रज के नाम से पहचाने जानेवाले राजा भर्तृहरि के बाल्यकाल का चित्रण, राजा के रूप में उनकी वीरता एवं प्रेम का चित्रण, राजा के द्वारा पिंगला के अभिसार का रहस्य-विमोचन और उसके बाद राजा का योग धारण करने का चित्रण विस्तार से किया गया है।

आलोच्य उपन्यास में भी पूर्ववर्ती 'जाग मछन्दर गोरख आया' की तरह नाथ योगी, कापालिकों के चमत्कार देखने को मिलते हैं। इसके साथ ही गूढ पुरुषों के द्वारा रहस्य भेदन के दृश्य भी मिलते हैं। कालिकाचार्य द्वारा बदले वेश में भी शुक और सारण के भेद को जानना और किसी औषधि चूर्ण से शुक सारण को बेहोश करना, विक्रम द्वारा पिंगला के अभिसार मार्ग -सुरंग का पता लगाना और सर्वमंगला द्वारा विक्रम को षड्यंत्र में फंसाने वाले पत्र का ब्योरा, स्वयंसिद्धा योगिनी द्वारा भर्तृहरि को 'अंगूठी', 'दर्पण' और दिव्य बरछी प्रदान करना, जिससे युद्ध में चमत्कारिक विजयश्री प्राप्त की जाये। ये सभी घटनाएं तिलिस्मी उपन्यासों जैसी लगती हैं।

(III) विश्वबाहु परशुराम– 32 परिच्छेदों में विभक्त इस उपन्यास का कथानक ऐतिहासिक- पौराणिक -मिथक आधारित है। इस उपन्यास का केन्द्रीय पात्र जामदग्न्य राम व प्रतिनायक कार्तवीर्य अर्जुन है। इस उपन्यास में पूर्व

वैदिक काल के परशुराम के आतंककारी चरित्र को यथासंभव मानवीय बनाया गया है किंतु राम ऋषि थे, अत: उनके मूल चरित्र को सुरक्षित रखा गया है।

मिथक के ग्रंथिविमोचन के संदर्भ में उपाध्याय जी ने उपन्यास की भूमिका मे कहा है,

"मेरे पूर्व उपन्यासों 'जाग मछन्दर गोरख आया' और 'जोगी मत जा' के विषय में मिथकीयता के औपन्यासिक इस्तेमाल पर आपत्ति की गई थी जो परशुराम पर इस उपन्यास के बारे मे भी उठ सकती है कि बौद्धिक और वैज्ञानिक का लेखक रचना में चमत्कारों का प्रयोग क्यों करता है, जैसे परशुराम में देवता है, सर्वज्ञ ऋषि है, अघोर तांत्रिक है और दिव्यास्त्रों के प्रयोग हैं"[9]

इस उपन्यास में अनेक ऐसी घटनाएं एवं दृश्य हैं जो सहज ही तिलिस्मी घटनाओं और दृश्यों से साम्य रखती हैं। राजा कार्तवीर्य के दरबार में श्रीलंका के राज प्रतिनिधि के रूप में विद्युन्माली-विद्याधर रूप बदलने एवं छल-बल करने में प्रवीण है। रति, राका और पूर्णिमा ऐयारों की तरह रूप बदल-बदलकर जमदग्नि आश्रम में रहती है और प्रेत शाल्मली और शंख तो अपने रुप बदल - बदलकर राजा कार्तवीर्य को परेशानी में डाल देतें है।

तिलिस्मी उपन्यासों के समान ही प्रस्तुत उपन्यास में भी जंगली जानवरों, श्मशान के कृत्यों, पर्वतों की खोह एवं अद्भुत टेढे-मेढे रास्तों के दृश्यों द्वारा वातावरण को भयद-भयंकर बनाया गया है। ऋषि जमदग्नि द्वारा पत्नी रेणुका के शिरचछेदन से मना करने पर परशुराम को छोड़कर सभी को जड़वत बना देना व परशुराम द्वारा माता रेणुका का शिरचछेदन करने की चमत्कारिक घटनाएं तिलिस्मी वातावरण का निर्माण करती हैं।

(IV) सिद्ध सरहपा– 'सिद्ध सरहपा' उपन्यास हिन्दी के प्रथम कवि एवं सिद्ध परम्परा में प्रथम ऐतिहासिक सिद्ध 'सरहपा' के जीवन चरित्र पर लिखा गया हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास है। उपन्यास की कथा 16 परिच्छेदों में विभक्त है। सिद्धों के बारे में कोई प्रामाणिक विस्तृत वर्णन नहीं मिलने से लेखक को इसमें कल्पना के सहारे साधनात्मक एवं वास्तविक जीवनवृत्त का वर्णन करना पड़ा है। शैव-शाक्तों में मंत्र-तंत्र विद्या से चमत्कार उत्पन्न करने का अद्भुत कौशल होता है, वैसा ही चमत्कार इस उपन्यास में भी यत्किंचित देखने को मिलता है।

तिलिस्मी उपन्यासों में राजाओं के पास ऐयार और गूढ पुरुष दरबार में नियुक्त होते थे, वैसे ऐयारों को आलोच्य उपन्यास में ढूंढना व्यर्थ है, लेकिन गूढ पुरुष भेदिए राजा रत्नपाल के दरबार में देखने को मिलते हैं। उपन्यास का आरंभ ही गूढ-पुरुष द्वारा दिए गए भेद से होता है-"स्वामी, राज्य तो गूढ-पुरुष या भेदिए ही चलातें हैं ये नीच नराधम उस दूती भिक्षुणी के पीछे पड़े हुए थे किंतु वह इन्हें मूर्ख बनाकर कहीं अदृश्य हो गई, सारे खिसियाए सियारों की तरह आपकी कुटिया पर ही चढ दौडे! ये इतने मूर्ख थे कि इन्हीं के सहायकों मे हमारे भेदिए वेश बदले हुए इनके साथ थे"[10]

चतुर कुटनी का ऐयारों की भांति भिक्षुणी का वेश धारण कर भगवती को मंत्र शक्ति द्वारा सम्मोहित कर राक्षी ग्राम के विप्रों के जाल में फंसाने का प्रयास करना ऐयारी-भेदक दृष्टि द्वारा भगवती का चतुर कुटनी के रहस्य को जान जाना और उसे धन देकर स्वयं के विरुद्ध रचे कुचक्र का रहस्य उगलवाना आदि घटनाएं तिलिस्मी ऐयारी की स्मृति दिला देती हैं।

तिलिस्मी उपन्यासों में जैसे बांधे गए तिलिस्म को खोलने में दैवीय सहायता या सूत्र मानचित्र के द्वारा नायक उसे खोलने में सफल होता है, वैसे ही सरहपाद आदि गुरु नागार्जुन की बिम्ब प्रेरणा एवं भगवती को मिले सूत्र की सहायता से आदि नागार्जुन के धातु-शोधन संबंधी सूत्रों की खोज करते हैं-"चीजों को उलटते पलटते अचानक भगवती को एक धातु का पट्टा भी मिला, जिसपर मानचित्र-सा बना हुआ था और सूत्र भी अंकित थे"[11]

तिलिस्म का खोलना और उसमें अपूर्व खजानें की प्राप्ति होती है, वैसा ही तिलिस्मी खजाना या कोष सरहपा को नागार्जुन के रसायन विज्ञान के सूत्रों की शोध संपन्नता पर मिलता है। उपन्यास में अद्भुत कौतूहलपूर्ण दृश्यों की

सृष्टि, भूत-प्रेतों की क्रियाएं, कौल कापालिकों के जादुई कारनामे, स्वप्नाभास, आंतरिक दूरदर्शन आदि क्रियाएं कल्पित चमत्कार पैदा कर वातावरण को विस्मयकारी एवं कौतूहलपूर्ण बना देते हैं जिसके दर्शन हमें तिलिस्मी उपन्यासों में भी मिलते हैं।

अनुसंधेय उपन्यास में तिलिस्मी तत्वों की मात्रा 'जाग मछन्दर गोरख आया', 'जोगी मत जा', 'विश्वबाहु परशुराम ' की अपेक्षा उत्तरोत्तर अवरोह क्रम में उपलब्ध होती है। फिर भी इसमें कई घटनाएं एवं दृश्य चमत्कारिक रूप से तिलिस्मी वातावरण की सृष्टि करते हैं।

5. उपसंहार– संपूर्ण विवेचन के पश्चात कहा जा सकता है कि विश्वम्भरनाथ उपाध्याय के 'जाग मछन्दर गोरख आया', 'जोगी मत जा', 'विश्वबाहु परशुराम' और 'सिद्ध सरहपा' में ही तिलिस्मी तत्वों का प्रयोग हुआ है। इन उपन्यासों के कथानकों की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक-मिथकीय होने के कारण वास्तविक वातावरण के निर्माण हेतु इनमें तिलिस्मी तत्वों का समावेश अनायास ही हो गया। 'जाग मछन्दर गोरख आया' उपन्यास में चित्रित कदलीवन का प्रसंग पाठक को सहज ही तिलिस्मी नायकों का ऐयारी द्वारा इमारतों में कैद हो जाना, फिर वहां से निकलने का मार्ग न पाना तथा पुन: ऐयारी करतबों द्वारा मुक्त हो जाना देवकीनंदन खत्री के उपन्यासों की याद दिलाता है।

'जोगी मत जा', में भी अनेक यौगिक चमत्कारों एवं कल्पित दृश्यों का वर्णन हुआ है। कथा के अंत में सत्य और न्याय की विजय, नीति वाक्यों का प्रयोग, शुकु, सारण, पवन, सर्वमंगला, माया, मालिनी आदि द्वारा ऐयारी करतब करना, अमावस्या की रात्री में कापालिकों की श्मशान साधना, भर्तृहरि द्वारा शमी वृक्ष के नीचे साधना करना, सिद्धियोगिनी द्वारा प्रदत्त अंगूठी, दर्पण, बरछी आदि दिव्यास्त्रों एवं प्रतीकों द्वारा असंभव को संभव बनाना. औषधि-चूर्ण से शत्रु पक्ष को बेहोश करना, गुफाओं आदि के डरावने दृश्य एवं घटनाएं तिलिस्मी वातावरण की सृष्टि करती हैं।

'विश्वबाहु परशुराम' में भी उड्डयन योग, आन्तरिक दूरदर्शन, इच्छित वेष- धारण, जादु-टोने द्वारा पदार्थों की उत्पत्ति आदि अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाएं चित्रित की गयी हैं। नायक के साथ नायिकाओं की साहसिक यात्राएं एवं नायिकाओं की साहसिक यात्राएं एवं नायक द्वारा साधना से अनेक दिव्यास्त्रों को प्राप्त करना भी उपन्यास में तिलिस्मी तत्वों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यास: डॉ. कैलाश प्रकाश, पृष्ठ- 3.
2. हिंदी उपन्यास:सिद्धांत और विवेचन: हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ-01.
3. ऋग्वेद : 1/11/7 अ.तथा 2/11/9 संदर्भ avedic concordance page -710.
4. प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यास: डॉ.कैलाश प्रकाश, पृष्ठ-268.
5. चंद्रकांता: चौथा हिस्सा, बीसवां बयान
6. हिंदी उपन्यास: उदय और उत्कर्ष- डॉ.सत्यपाल चुघ, पृष्ठ- 46 .
7. जाग मछन्दर गोरख आया: विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, पृष्ठ- 20.
8. जाग मछन्दर गोरख आया: विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, पृष्ठ-32 .
9. 'भूमिका' विश्वबाहु परशुराम: विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, पृष्ठ-15.
10. सिद्ध सरहपा: विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, पृष्ठ-165.
11. सिद्ध सरहपा: विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, पृष्ठ-251.

•